श्री समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर अत्यंत धूमधाम से सम्पन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार विधान 1008 इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा रविवार, दिनांक 9 अक्टूबर से शुक्रवार, दिनांक 14 अक्टूबर, 2016 तक टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित अत्यंत धूमधाम से संपन्न हुआ।

दिनांक 9 अक्टूबर को भव्य जिनेन्द्र रथयात्रा के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। रथयात्रा कुन्दकुन्द कहान नगर से प्रारम्भ होकर पाण्डाल स्थल पर पहुंची। रथ में श्रीजी विराजमान करने का सौभाग्य श्री संजयजी कोठारी परिवार मुम्बईवालों को प्राप्त हुआ। श्रीजी के रथ के सारथी थे श्री कैलाशचंदजी छाबड़ा मुम्बई तथा धर्मध्वजा लेकर चलने वाले श्री अभयकुमार जैन औरंगाबाद थे। शोभायात्रा में शुभ्र परिधान में 51 कलश एवं 51 जिनवाणी लेकर महिलाएं पंक्तिबद्ध शोभायमान थीं। श्वेतवस्त्र में पुरुषवर्ग आध्यात्मिक स्वर लहरियों को गुंजायमान कर रहे थे।

सभा स्थल पर श्रीजी का अभिषेक देखकर आगन्तुक हर्षविभोर थे। अभिषेक के उपरान्त श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई परिवार द्वारा ध्वजारोहण एवं श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार बजाज परिवार कोलकाता द्वारा भव्य मण्डप व मंच के उद्घाटन की विधि संपन्न की गई। शिविर उद्घाटनकर्त्ता श्री नरेशजी लुहाड़िया परिवार दिल्ली थे। पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मंगलाचरणोपरान्त टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा संस्था का परिचय व समागत अतिथियों के सम्मान में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि इस भौतिकवादी युग में 50 वर्ष तक अध्यात्म की अलख जगाना कोई साधारण बात नहीं है। स्वर्ण जयंती गीत को आपने स्मारक की रीति-नीति का दस्तावेज निरूपित करते हुए उसे आत्मकल्याण की एकाकी प्रक्रिया बताया। आपने अपनी बात को आगे बढाते हुए कहा कि वीतरागता के अतिरिक्त हम कहीं मस्तक नहीं झुका सकते। हमारा मस्तक कहाँ झुके इसका निर्णय हम करेंगे अन्य नहीं। सभा के विशिष्ट अतिथि महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या थे, उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा

कि टोडरमल स्मारक अध्यात्म जगत में विश्व का सर्वाधिक सशक्त व ऊर्जावान क्षेत्र है, जिसने अन्तर्विरोधों के बावजूद अपनी 24 कैरेट शुद्धता बरकरार रखी है। गुरुदेवश्री के अवसान से उत्पन्न शून्य को भरने में टोडरमल स्मारक का महत्वपूर्ण योगदान है।

सभा के मुख्य अतिथि श्री अजितप्रसादजी दिल्ली ने कहा कि यह भव्य आयोजन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से भी बड़ा प्रतीत हो रहा है। इसके अतिरिक्त श्री कांतिभाई मोटानी व श्री विमलजी नीरु केमिकल्स दिल्ली ने भी सम्बोधित किया। सभा की अध्यक्षता कर रहे श्री राजेशजी जैन पुष्पांजलि दिल्ली द्वारा 'अध्यात्म गीत' नामक भजनों की पुस्तक का विमोचन किया गया। श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल ने आयोजन का इतिहास प्रस्तुत करते हुए कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के रचनात्मक सहयोग की मुक्तकंठ से सराहना की तथा सुरेशजी पाटनी, सुशीलजी बजाज (मुन्नाभाई) व भरतभाई टिम्बडिया की 150 सदस्यीय टीम का सहयोग के लिये आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर समागत अतिथियों का माल्यार्पण व दुपट्टे द्वारा स्वागत किया गया। श्री कुन्दकुन्दाचार्य के चित्र का अनावरण श्री नितिन सी.शाह मुम्बई, श्री अमृतचंद्राचार्य के चित्र का अनावरण श्री प्रकाशचंदजी कैलाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री दीपकभाई दोशी मुम्बई एवं स्वर्णपुरी (सोनगढ) के साथ गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण श्री रमेशचंद सौगानी परिवार कोलकाता द्वारा किया गया। टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में विराजित पंचमूर्ति की प्रतिकृति का उद्घाटन श्री नरेशजी लुहाड़िया परिवार दिल्ली द्वारा किया गया।

अंत में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने पण्डित प्रवर टोडरमलजी के नेतृत्व में किये गये इन्द्रध्वज विधान का उल्लेख किया और बताया कि उक्त इन्द्रध्वज विधान ही इस विधान का आधार सूत्र है। चूंकि अब इन्द्रध्वज विधानों के आयोजन बहुतायत होने लगे हैं, अत: समयसार विधान करने का भाव जागृत हुआ। इसके लिये इस समयसार विधान की रचना की गई। इसकी एक-एक पंक्ति में रहस्य भरा हुआ है। आपने कहा कि 80 वर्ष तक मैंने जो भी ग्रहण किया है, इन 5-6 दिनों में वह सब मैं आपको दे जाना चाहता हूँ।

दैनिक कार्यक्रमों की जानकारी पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने दी एवं आभार प्रदर्शन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

सभा का संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा किया गया।

प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार की

73वीं गाथा पर सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए। तत्पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा सल्लेखना, जिनपूजन का यथार्थ स्वरूप एवं अकर्त्तावाद विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन आदि विद्वानों द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा समयसार के परिशिष्ट के आधार से ज्ञानस्वभाव पर हुए प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई आदि विद्वानों के समयसार ग्रंथ पर हुये व्याख्यानों का लाभ मिला।

प्रात: 5.45 प्रौढ कक्षा में प्रतिदिन पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के व्याख्यान का लाभ मिला। श्री जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के समयसार पर प्रवचन एवं अरहंत चैनल पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुरुषार्थसिद्धयुपाय पर प्रवचनों के प्रसारण हुये।

प्रात:, दोपहर एवं सायंकाल बालकक्षायें डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में चलाई गई। सायंकाल श्री जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन किया गया।

आयोजन के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन परिवार दिल्ली एवं विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती कुसुम जैन ध.प. विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल दिल्ली थे।

मुख्य मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्रीमती कुसुम जैन ध.प. विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स दिल्ली, श्री सुरेशचंद जी जैन शिवपुरी, श्रीमती स्नेहलता ध.प. जैन बहादुर जैन कानपुर, श्रीमती शशि ध.प. सेठ गुलाबचंद जैन सागर, श्रीमती अर्चना ध.प. सेठ सुधीर जैन कटनी थे।

श्री समयसार महामंडल विधान का आयोजन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मुख्य प्रतिष्ठाचार्यत्व में सर्वश्री राजकुमारजी उदयपुर, अजितजी अलवर, ऋषभजी छिन्दवाड़ा, धर्मेन्द्रजी कोटा, मनीषजी पिड़ावा, विवेकजी

इन्दौर, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हे भैया सागर, ब्र. मनोजजी जबलपुर, सुबोधजी ग्वालियर आदि के सहयोग से संपन्न किया गया।

इस संपूर्ण आयोजन में देशभर से पधारे 10 हजार 500 साधर्मियों को किसी भी प्रकार की कठिनाई/प्रतिकूलता नहीं हुई-यह उल्लेखनीय उपलब्धि रही।

संपूर्ण आयोजन की सफलता का श्रेय श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री भरतभाई टिम्बडिया, श्री सुशीलकुमारजी बजाज (मुन्नाभाई), श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री विपिनजी शास्त्री, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, रूपेन्द्रजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री इन्दौर, सर्वज्ञ भारिल्ल एवं इनकी संपूर्ण टीम को जाता है।

शिविर के समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि शिविर में 15 विद्वानों के माध्यम से लगभग 10 हजार 500 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। हजारों घंटों के सी.डी./ डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत प्रतिदिन रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही।

दिनांक 9 अक्टूबर को श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा **टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक** नामक नाटक किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री नरेशजी पाटोदी कोलकाता एवं विशिष्ट अतिथि श्री संजयजी कासलीवाल कोलकाता थे। दिनांक 10 अक्टूबर को विख्यात गायक डॉ. गौरव जैन सौगानी एवं दीपशिखा जैन, जयपुर द्वारा **आध्यात्मिक भजन संध्या** का आयोजन हुआ, जिसके मुख्य अतिथि श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं विशिष्ट अतिथि श्री जयन्तीलालजी मूथा कलकत्ता थे। दिनांक 11 अक्टूबर को टोडरमल स्मारक भवन पर आधारित **फीचर फिल्म** का प्रदर्शन हुआ, जिसका उद्घाटन श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने किया। दिनांक 12 अक्टूबर को पृथ्वी थियेटर, मुम्बई के कलाकारों द्वारा **वैराग्य महाकाव्य पर नाट्य प्रस्तुति** आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा थे। ●

विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 11 अक्टूबर को अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय सम्मेलन सहस्राधिक विद्वानों की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री रमेशजी सोगानी कलकत्ता तथा विशिष्ट अतिथि दिलीपजी सेठी कलकत्ता थे। समागत सभी अतिथियों का तिलक एवं माल्यार्पण द्वारा स्वागत परिषद् के प्रकाशन मंत्री डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने किया।

इस अवसर पर श्री अखिल बंसल (महामंत्री) ने विद्वत्परिषद् की स्थापना से लेकर अभी तक परिषद् की उपलब्धियों, साहित्य प्रकाशन, संगोष्ठियों एवं समयसार वाचना आदि पर प्रकाश डाला। डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल (कार्याध्यक्ष) ने इतिहास और संस्कृति के महत्व को दर्शाते हुए कक्षा 6 की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में भगवान महावीर के संबंध में भ्रांत धारणाओं के सुधार करवाने, जैनदर्शन के मूल सिद्धांतों का समावेश करवाने संबंधित विवरण प्रस्तुत किया और प्राकृत भाषा के विकास हेतु प्राकृत/अपभ्रंश अकादमी की स्थापना हेतु प्रयासों का उल्लेख किया। इसके पश्चात् डॉ. बंसल ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं सोनगढ ट्रस्ट की उपलब्धियों का उल्लेख कर उनका अभिनन्दन किया।

विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ.भारिल्ल की भावनाओं का अनुमोदन करते हुए विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति ने कुण्डलपुर-दमोह मंदिर की पूर्णता हेतु दिगम्बर जैन समाज की सभी संस्थाओं, मंच (जैन संस्कृति रक्षा मंच), विद्वत्गण और समाज से सर्वसम्मति से अनुरोध किया कि सद्भावपूर्वक सर्वमतभेद विस्मृतकर और कानूनी बाधाएँ समाप्तकर सहयोग प्रदान करें और भगवान महावीर की दिगम्बर जैन मूल आम्नाय की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें। उपस्थित 10 हजार के जनसमूह ने डॉ. बंसल के उक्त प्रस्ताव का करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। इस कार्यक्रम का प्रसारण (टेलिकास्ट) विश्वभर में हुआ।

डॉ. भारिल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में राष्ट्रीय विद्वत्परिषद् की उपयोगिता और उसके कार्यों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. राजेन्द्र बंसल के इतिहास, शोध और भगवान महावीर की जन्मभूमि वासोकुण्ड-वैशाली की सिद्धि में उनके प्रयासों और लेखन की प्रशंसा की और सभी के सहयोग का आह्वान किया। ●

सम्मान समारोह संपन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 18वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 13 अक्टूबर को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के उन्नयन में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले प्रमुख महानुभावों एवं संस्थाओं का सम्मान समारोह संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर ने की।

समारोह के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, बाबूभाई मेहता, श्री पूरनचंदजी गोदिका के प्रतिनिधि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका व श्री सौरभ गोदिका को, श्री नेमीचंदजी पाटनी के प्रतिनिधि के रूप में श्री नगेन्द्रजी पाटनी मुम्बई को एवं श्री महेन्द्रजी सेठी के प्रतिनिधि के रूप में श्री आनन्दजी सेठी व श्री अनिलजी सेठी जयपुर को लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड दिया गया।

समारोह में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि सभी विद्वत्गण उपस्थित थे।

संस्थाओं के सम्मान के अन्तर्गत (1) श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के प्रतिनिधि के रूप में श्री अनंतभाई शेठ; (2) श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के प्रतिनिधि के रूप में श्री बसंतभाई दोशी, श्री महिपालजी ज्ञायक, श्री अनंतभाई शेठ, श्री भरतभाई, श्री सुरेशजी पाटनी, श्री अशोकजी जबलपुर; (3) श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, मंगलायतन के प्रतिनिधि के रूप में श्री अशोकजी लुहाड़िया; (4) श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट, ध्रुवधाम-बांसवाड़ा के प्रतिनिधि के रूप में श्री महीपालजी ज्ञायक व श्री धनपालजी ज्ञायक; (5) श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम, कोटा के प्रतिनिधि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज व श्री तन्मयजी बजाज; (6) श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट, उदयपुर के प्रतिनिधि के रूप में श्री ललितजी लूणदा व श्री राजकुमारजी शास्त्री; (7) श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, नागपुर के प्रतिनिधि के रूप में श्री नरेशजी (संयोजक), डॉ. राकेशजी शास्त्री (निर्देशक) व पण्डित मनीषजी शास्त्री; (8) श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्ट, खनियांधाना के प्रतिनिधि के रूप में श्री नरेन्द्रजी (कोषाध्यक्ष) व श्री संतोषजी वैद्य (ट्रस्टी); (9) श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सिद्धायतन-द्रोणगिरि के प्रतिनिधि के रूप में श्री चंद्रभानजी (अध्यक्ष), श्री मुन्नालालजी जैन (मंत्री); (10) पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली; (11) चैतन्यधाम, अहमदाबाद; (12)आत्मसाधना केन्द्र आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली; (13) श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, कुन्दकुन्द नगर-सोनागिर; (14) कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन का सम्मान किया गया। ●

स्नातक परिषद् का राष्ट्रीय सम्मेलन

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ स्वर्ण जयंती महोत्सव शिविर के अवसर पर दिनांक 9 अक्टूबर को रात्रि में पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का राष्ट्रीय सम्मेलन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री की अध्यक्षता एवं पण्डित शिखरचंदजी विदिशा के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ।

स्नातक परिषद् के वरिष्ठ सदस्य डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संतोषजी शास्त्री कटनी, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री सागर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित राकेशजी लोनी दिल्ली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर आदि मंच पर उपस्थित रहे। परिषद् के कार्याध्यक्ष पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने परिषद् का परिचय दिया। सभी का स्वागत परिषद् के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं कार्यकारिणी सदस्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने तिलक, माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र से किया।

तमिलनाडु के स्नातक प्रतिनिधि जम्बूकुमारजी शास्त्री चेन्नई, कर्नाटक के बाहुबली शास्त्री धारवाड़ एवं महाराष्ट्र के महावीर पाटील सांगली ने अपने-अपने प्रदेशों में संचालित तात्त्विक गतिविधियों का परिचय कराया। मुख्य अतिथि पण्डित शिखरचंदजी एवं अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी के उद्बोधन व प्रेरणा का लाभ मिला।

मंगलाचरण कु.प्रतीति पाटील ने एवं संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। ●

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ

राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

सम्मेदशिखरजी : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 10 अक्टूबर को अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई मोटानी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सौरभजी जैन मेरठ थे।

महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संगठन की नीतियों व कार्यक्रमों पर प्रकाश

डाला। फैडरेशन के प्रदेशाध्यक्षों क्रमश: मध्यप्रदेश के श्री विजयकुमारजी बड़जात्या, राजस्थान के श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री, महाराष्ट्र के श्री महावीरजी पाटील, पश्चिम उत्तरप्रदेश के मंत्री श्री सौरभ जैन एवं महिला प्रकोष्ठ की संयोजक श्रीमती शुद्धात्मप्रभा टडैया ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। (विस्तृत समाचार अगले अंक में...) ●

विद्वत्परिषद् की बैठक में प्रस्ताव

सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती के अवसर पर दिनांक 11 अक्टूबर को अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति की बैठक विशाल जनसमूह के मध्य डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

समन्वय वाणी जून II 2016 मूलाम्नाय विशेषांक के पृष्ठ 2 पर श्री संतोष सिंघई (अध्यक्ष-श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर) के नाम से निम्न समाचार प्रकाशित हैं -

''अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल का गढाकोटा पंचकल्याणक के पूर्व 24 दिसम्बर 2015 को सपत्नीक कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र पर दर्शनार्थ पधारना हुआ। आपने तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा हो रहे जिनमंदिर के निर्माण पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसे शीघ्र पूरा करने की भावना व्यक्त की। आपने चर्चा के दौरान मूलाम्नाय (तेरापंथ) के उन्नयन व विकास हेतु अपना हर संभव पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्रीक्षेत्र के पदाधिकारियों द्वारा आपका तिलक, माला के साथ सम्मान किया।''

विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति, विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. भारिल्ल की उक्त भावनाओं की सर्वसम्मति से अनुमोदना करती है और प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (बड़े बाबा) के नव निर्माणाधीन मंदिर की पूर्णता हेतु दिगम्बर जैन समाज की सभी संस्थाओं, मंच (जैन संस्कृति रक्षा मंच), विद्वत्गण और समाज से अनुरोध करती है कि सद्भावपूर्वक सर्वमतभेद विस्मृतकर और कानूनी बाधाएँ समाप्त कर कुण्डलपुर के, बड़े बाबा के निर्माणाधीन भव्य मंदिर के निर्माण में सहयोग प्रदान करें और भगवान महावीर का दिगम्बर जैन मूल आम्नाय की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में सहयोग करें। उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि से इसका समर्थन/अनुमोदना की।

प्रस्तावक - डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल (कार्याध्यक्ष)